

# आधुनिक युगमां दिगंबर जैन धर्मना सथवारे स्त्रीओनो अने स्त्रीओ माटेनुं योगदान

डो. शैली गाला

आसिस्टन्ट प्रोफेसर, श्रीमती पी. ऐन. दोशी वुमन्स कोलेज, घाटकोपर वेस्ट,

मुंबई, 400086

ऐस ऐन डी टी युनिवर्सिटी.

email id: shaili.gala@spndoshi.com

## प्रस्तावना

हिंदुओनी साथे, जैनो पण भारतमां सौथी प्राचीन धार्मिक समुदाय छे. तेमनी ओणभ तेमना अलग धर्मशास्त्र, तत्वज्ञान, धार्मिक-सामाजिक-कर्मकांडो, साहित्यिक परंपरा वगैरे द्वारा पुष्टि मठे छे. ऐतिहासिक कालमां जैनोना मूळ व्यवसाय स्थानिक अने लांबा अंतरना वेपार रह्यो छे. परिणामे समाज आर्थिक रीते समृद्ध थयो छे. व्यवसाय साथेना समुदायने साक्षरताना केटलाक घटको प्राप्त करवानी इरज पाडी. ऐवुं कहेवामां अतिशयोक्ति नथी के आ समुदाय हमेशाथी साक्षर रह्यो छे. साक्षरताये तेमने प्राकृत अने अपभ्रंशा ने ज्वंत राभवा सक्षम बनव्या, जे भाषाओमां मोटी संख्यामां जैन शास्त्रीय, साहित्यिक अने दार्शनिक ग्रंथो छे. सामाजिक क्षेत्रे जैन धर्मनुं नोधपात्र योगदान ऐ छे के तेमणे महिलाओने जैन संघ मां प्रवेश आपी ने जातिनो कोइ भेद राभ्यो नथी. दक्षिण भारतना शिलालेभो परथी जाणवा मठे छे के जैन धर्म स्त्रीओ प्रत्ये उदार हतो. जैन धर्मना भक्तो तरीके मोटी संख्यामां सामान्य महिलाओ अने साध्वीओनो उल्लेख करवामां आव्यो छे. तेओ धर्म अने डिडोसोडोनी सनातन सत्यने समजवा अने अनुसरवना उद्देश्य साथे ब्रह्मचर्यनुं ज्वन ज्वता हता. अजिता, यंदना, जयंती वगैरे महावीरना प्रभ्यात साध्वी-शिष्या हता. आ साध्वीओने जैन शास्त्रोना अभ्यास करवानी परवानगी आपवामां आवी हती. हरिभद्रसूरी, आठमी सदीना जैन धर्मना नोधपात्र विद्वान, याकिनी नामनी जैन साध्वी थी प्रेरित हता. कदंब, गाओगा अने होयसला परिवारोनी महिलाओ तेमज सामंतओ, सेनापतिओ अने अन्य अधिकारीओनी पत्नीओये जैन धर्मना प्रचारमां विशिष्ट भूमिका लजवी हती. कान्ति जे प्रभर वक्ता अने कवियत्री हता, तेओ अलिनव पंपा साथे, होयसला राजा बल्लाल ना दरबार रत्नोमांना ऐक हता. राजवी, मंत्री अने सेनापति आदि भूमिका पण स्त्रीओ ये भूतकालमां उमदा लजवी छे, तेनो उल्लेख जैन साहित्य अने शीला लेभोमां थयेलो छे. समय जता मोगलोना आक्रमण बाद समाजमां स्त्रीओनो ओनुं स्थान सीमित थवा लाज्युं अने ते घरनी यार दिवारो पूरती ज मर्यादित रही गछ. सेकडो वरस आवी परिस्थिति रक्षा बाद स्वतंत्रता यणवण ना ऐक भागडुपे ज्यारे गांधीजुऐ स्त्री केलवणी माटे आहवान कर्युं त्यारे देशभरमां घण्टा जैन श्रेष्ठीओ ऐ स्त्रीओ माटे शाणा अने महाविद्यालयो नी शरुआत करी. लेभिका पण पोताने भाग्यशाणी माने छे जे ऐवी संस्था साथे जोडावेली छे जे आजथी सो वर्ष पहेला जैन मुनि पंडित रत्न चंद्र महाराज साहेबनी प्रेरणाथी स्त्रीओ शरु थछ हती. श्री पंडित रत्न चंद्र जैन कन्या शाणा ट्रस्ट ना नामे ओणभाती आ संस्था हेठण आज 5000 थी वधु विद्यार्थिनीओ शाणा अने महाविद्यालय मां अभ्यास करे छे.

## आचार्य श्री विद्यासागर महाराज अने 'भूकमाटी' महाकाव्यः

अंग्रेजोना समयमां दिगंबर जैन धर्म प्रमाणे साधुओने आचार पाणवो लगभग असंभवित हतो तेथी मुनि परंपरा लगभग लुप्त थवाना आरे हती, त्यारे चारित्र सम्राट श्री शांति सागर जे तेने इरी ज्वंत करी, अने तेमना शिष्य ना शिष्य संत शिरोमणी 108 आचार्य श्री विद्यासागर महाराज 20 मी सदीना इक्त दिगंबर जैन संप्रदायना ज नहीं परंतु समग्र ज्व

सृष्टिना उपकारक, प्रेरक, मित्र अने गुड, ऐक ऐवा संत थई गया के जेमनुं जिवन संपूर्ण दर्शन छे, जेमनुं आचरण जिवो प्रत्ये कडुणा थी भरेलुं छे, जेमना विचारोमां सर्व जिवोनुं कल्याण समायेलुं छे, जेमना उपदेशमां जगत तेना विकासना मार्ग मोकणो करे छे. तेमना विचारो भारतीयता, देशभक्ति अने कर्तव्यनिष्ठा प्रत्ये अपार वझादारीथी तरबोज छे. प्राचीन भारतीय शुभचिंतको, तत्वचिंतको अने संतोनुं अनुकरण करवा छतां तेमना विचारो मौलिक छे. शास्त्रीय (संस्कृत अने प्राकृत) अने कटलीक आधुनिक भाषाओ, हिन्दी, मराठी अने कन्नड ना निष्णात, ते हिन्दी अने संस्कृतमां ऐक प्रबण लेभक हता. कटलाक संशोधकोअे मास्टर्स अने डोक्टरेट डिग्री माटे तेमना कार्योंनो अभ्यास कर्यो छे.

ई.स. 1987 आचार्यश्रीअे 'मूकमाटी' महाकाव्य रची इक्त हिन्दी साहित्य ज नहीं, परंतु समग्र साहित्य जगतने अलौकिक, अनेरी भेट आपी छे. ते महाकाव्य पर 2023 सुधी 52 पीअेचडी, तेमज घणा अेम डील ना शोध प्रबंध अने अेम.अे, अेम.अेड ना लघु शोध प्रबंध लभाया छे. आ शकवतीं ग्रंथ पर लगभग पोणा त्रणसो समीक्षकोअे 550 पृष्ठना ऐक ऐवा त्रण भंड हिन्दीमां मननीय समीक्षा लभी छे, जे भारतीय ज्ञानपीठे प्रकाशित करी छे. आठ जेटली जुडी जुडी भाषाओमां तेना अनुवाद थया छे. 17 फ़ेब्रुआरी, 2024 ना रात्रे अेम नो उचार करी, समाधिष्ट थयेला आचार्य श्रीजुने विनयाजलि आपता पद्मश्री कुमारपाण देसाई 25 फ़ेब्रुआरी, 2024 ना गुजरात समाचार ना लेभमां लभे छे के 'मूकमाटी' महाकाव्यमां कोई प्रभावशाली राजवीना चरित्रने, कोई ऐतिहासिक प्रसंग ने के कोई लव्य धार्मिक विषयनुं आलेभन नथी परंतु तुख, पद दलित अने सामान्य लागती माटे अेना विषय वस्तु तरीके मणे छे. ऐक महाकाव्यनी रचना माटी ने लक्ष राभीने करवी, अे स्वयं ऐक पडकार छे अथवा कहो के मौलिकता नो ऐक यमत्कार छे. सामान्य बाबतने असामान्य बनावती अेमनी सजक प्रतिभानो स्पर्श आ ग्रंथमां पढे-पढे अनुभववाय छे. जमीन परनी विभरायेली माटी परथी कल्याणकारी मंगण कणश सुधीनी यात्रा दर्शावीने मानवीय चेतना ना विकासनी अनंत शक्यताओने ताकी छे अने अे रीते ठोडी भीण थी ठोया शिपर सुधीना अर्थात पापमांथी परमात्मा सुधीनी यात्रानो प्रेरक आलेभ आभ्यो छे. कलाकृति तरीके मात्र माटीना उद्धारने प्रतिकात्मक सूत्र रूपे लईने कटकटला विषयमां आचार्यश्रीनी विचार यात्रा गति करे छे. अेमां धर्म, दर्शन, राजनीति, समाज, अर्थकारण, अने वर्तमान संस्कृति जेवा विषयो सांकणी लेवामां आव्या छे अने भूमी तो अे छे के आ बधा विषयोनी साथे साथे माटीनी विकासयात्रा नी साथे, व्यक्तित्वनी अने विश्वनी विकास यात्रा नी कथा प्रति ध्वनित थाय छे.

मूकमाटी महाकाव्यनुं गुजराती अनुवाद ब्रह्मचारी बिंदु पारेभ अने सह अनुवाद श्री भरतभाई कापडीयाअे कर्युं छे. आचार्यश्री, भंड-त्रण पुष्यनुं पालन पाप- प्रक्षालन मां, पुष 200 मां लभे छे,

“छे नारी जतिनी लाक्षणिकताओ अनेक  
छे जे पुरुष सन्मुख आदर्शरूप.”

नारीनी अपूर्व व्याख्या आपता तेओ जणावे छे,

“कडुणाकर छे नयनो तेनां,

नथी स्पर्शो शक्ति शत्रुता तेने,

मिलनसार मित्रता

थती प्राप्त तेनी कनेथी सहज, विनामूल्ये.

तेथी ज तो

तेनुं सार्थक नाम छे 'नारी' अर्थात

'न अरि', नारी...

अथवा नथी आरी तेओ

.....तेथी... नारी..?”

महिला शब्द नुं भूब ज अलौकिक अर्थघटन करता तेओ लभे छे, जिवनमां मंगलमय माहोल जे लावे तेने महिला कहेवाय. जे पुरुष निराधार निरालंब, हतोत्सव जिवन प्रत्ये उदासीन होय अे पुरुषमां धीरज आस्था जगावती तेने सन्मार्ग भण्णी दोरती अेटले महिला.

अबला शब्द विशेषे तेओश्रीना अत्यंत हकारात्मक विचारो नीयेनी पंक्तिओमां द्रष्टिगोचर थाय छे.

“जे अव अर्थात्

‘अवगम’- ज्ञान ज्योति प्रगटावती,

मिटावी तिमिर- तामस

जागृति जिवनमां लावती

‘अबला’ ते कहेवाती....!

अथवा जे पुरुषनी चित्तवृत्तिने

विगत दशाओथी

अने

अनागत आशाओथी

पूर्णेपक्षे वेगणी करी,

‘अव’ अर्थात्

आगत- वर्तमानमां लावती

‘अबला’ ते कहेवाती....!”

अबलानी बीज परिभाषा आपता तेओ श्री लभे छे संकट नहीं ते, अबला छे. आ अबला विना सबल पुरुष पक्ष निर्बल बने छे अने समस्त संसार समस्या समूहो पुरवार थाय छे माटे ज अबला तेना सार्थक नाम छे. कुमारी शब्द नो भावार्थ आ प्रमाणे कर्यो छे: ‘कु’ अर्थात् पृथ्वी, ‘मां’ अर्थात् लक्ष्मी अने ‘री’ अर्थात् आपनार, तेनो भावार्थ थाय छे के ज्यां सुधी आ धरा पर कुमारी रहेशे त्यां सुधी धरा सदा संपन्न रहेशे अने तेथी ज संतोये भुमारीने प्रथम मंगल सर्व लौकिक मांगल्योमां कीधी छे.

स्त्री अेटले कोए? ते केवी होय? तेना अंतरना शुं भाव छे? वगैरे नीयेनी पंक्तिओमां दर्शावायुं छे:

“‘स’ अर्थात् समशील संयम,

‘त्रि’ अर्थात् त्रय.

धर्म, अर्थ, काम-पुरुषार्थोमां

पुरुषने कुशल-संयत करती

तेथी... ‘स्त्री’ ते कहेवाती....!

बेउ कुल नुं मंगल वधारती,

बेउ लोकनुं सुख सज्जती,

स्व-पर हित करनारी,

गमे त्यां रहने, गमे ते सहीने पक्ष

हितनुं दोहन करती

तेथी... ‘दुहिता’ ते कहेवाती....!

सहीओथी पुरुष समाजने

आपती आ सदुपदेश नारी-

“ओ अनंग संग थकी बलतां लोको!

सांभलो ,लगीरेक सांभलो तो....!

स्वीकारुं छुं... के

छुं छुं ‘अंगना’

परंतु,

हुं केवण अंग ना.....  
शुं हुं कंठक विशेष पण...!  
अंगनी भीतर पण  
कंठक जंभवानो प्रयास करो,  
सिवाय अंग पण  
कंठक बीजुं मांगवानो प्रयास करो,  
याहुं हुं आपने जे  
छे या स्वीकारवानी तने?  
'ते' चिरंतन शाश्वत छे  
'ते' निरंजन भास्वत छे,  
भार- रहित आभाजुं कर आभार दर्शन तुं!"

आवी अनेक अलौकिक अनुपम व्याख्याओ आपीने इकत नारीनुं ज नहीं परंतु समग्र जिवसृष्टिनुं गौरव आचार्य श्रीजुंये वधार्युं छे. साया संतो ये होय जे जेमनुं आचरण ज उपदेश होय. आम आचार्य श्रीजुंये इकत साहित्यमां ज स्त्रीओने महत्वनुं स्थान नथी आप्युं परंतु आचरणमां अनेक रीते मूकी बतव्युं छे.

#### प्रतिभास्थली - कन्या निवासी शैक्षणिक संस्था:

कन्या उमय कुल वर्धीनी छे, तेथी तेना विकास साथे बे कुटुंबो तथा समाज सीधी रीते संकलायेलो होय छे, माटे आचार्य श्रीजुंनी अपार कृपा अने द्रष्टिथी प्रतिभास्थली - अनोभी कन्या निवासी शैक्षणिक संस्था सर्जो अने भीली छे. पश्चिमी संस्कृति ना भाडां गण्डकाव थछ रहेली भारतीय संस्कृति ने बयाववा अने भारतने इरी अेक विश्वगुरु बनाववानी तेमणे जंभना करी, अने तेमना मस्तकमांथी अेक स्वस्थ शिक्षणनी योजना घडवामां आवी तेना सात स्तंभो छे, स्वस्थ तन, स्वस्थ वयन, स्वस्थ मन, स्वस्थ धन, स्वस्थ वन, स्वस्थ वतन, स्वस्थ येतन. जबलपुर(2006), डोंगरगढ (2012), रामटेक(2014), पापोराज (2018), अने छन्दोर(2018) आ पांय जग्या पर प्रतिभास्थली शरु करवामां आवी छे, जेमां अत्यारे 3500थी वधु विद्यार्थीनीओनी लाभ लछ रही छे, 350 जेटली बाल ब्रह्मचारिणी विदुषी अने प्रशिक्षित शिक्षको विद्यार्थीनीओना उज्जवण लविष्य माटे तेमनी निःस्वार्थ सेवा आपी रह्या छे. सी.बी. अेस.सी. मान्यता प्राप्त संस्था आजना आधुनिक वातावरणमां प्राचीन गुरुकुलोनी स्मृतिने ज्वंत करी रही छे. "अहीं शिक्षणो उद्देश्य निर्वाह नथी पण जवणनुं सर्जन छे. शिक्षण अे पैसा कमावानुं साधन नथी परंतु ज्ञान आपवानी पवित्र प्रक्रिया छे." कस्तुरी रंग राजन कमिटीअे नेशनल अेज्युकेशन पोलिसी 2020 ना संदर्भमां आचार्य श्रीजुंनी अने प्रतिभास्थली प्रेरणादायक मुलाकात लीधी हती.

#### मरुदेवी हेन्डीकाइट:

प्राचीन संस्कृति अने हस्तकला नी जाणवणी अने प्रोत्साहन माटे महिलाओना उत्थान तरङ्ग बीजो प्रोजेक्ट 'मरुदेवी हेन्डीकाइट' आचार्य श्रीजुंनी प्रेरणा अने मार्गदर्शन हेठण शरु थयो, ज्यां छणी महिलाओने आत्मनिर्भर जवण जववानो आधार मणी रह्यो छे अने तेओ पोतानी महेनत अने कला कौशल्य थी रसप्रद सामग्री जेम के- बेग, पर्स, साडी, कुर्ती, बेडशीट, माणा वगैरे तैयार करी रही छे.

#### आर्षिका 105 पूर्णमति माता:

आचार्यश्रीना 400थी वधु विशाण शिष्य संघमां 172 जेटली आर्षिकाओ दीक्षित करी छे जे मोटे भागे ग्रेज्युअेट के डबल ग्रेज्युअेट होवा साथे बाण ब्रह्मचारिणी छे. तेमांनी ज अेक आर्षिका पूर्णमति माताअे साहित्य क्षेत्रे विशाण सर्जन करी भारतनी अर्वाचीन विदुषिओ मां पोतानुं नाम अंकित कर्युं छे. जैन साहित्य नी अमर कृति आचार्यश्री मानतुंग ज रचित श्री लक्ष्मामर स्तोत्र जे 48 गाथानुं छे, तेना दरेक अक्षर परथी अेक अेक गाथा बनावी, तेना बहुमानमां 2688 गाथाओ रथी श्री लक्ष्मामर महामंडल विधान नी रचना करी. साहिताचार्य डो. सोनल कुमार जैन लभे छे के श्री लक्ष्मामर महामंडल विधान आ काव्य

मानवीय नथी, પણ દેવીય પ્રતિભાસંપન્ન કવિત્વની સરલતમ અભિવ્યક્તિ છે, જે પ્રારંભિક સ્તરના વાચકોને પણ એટલું જ અલહાદીક અને આનંદિત કરે છે જેટલા વિષયના વિશેષજ્ઞો!

પૂર્ણમતિ માતાએ 30 ચોવીસી વિધાન, શ્રી મહાવીર વિધાન, શ્રી નેમિનાથ વિધાન, તત્ત્વાર્થ સૂત્ર વિધાન, ગુરુભક્તિ શતક, આત્મબોધ શતક, પ્રભુ ભક્તિ શતક વગેરે અનેક પ્રકારના સાહિત્યનું સર્જન કરી ભારતીય જ્ઞાન પ્રણાલીમાં અનેરું યોગદાન આપ્યું છે.

#### આર્થિકા 105 જ્ઞાનમતીજી માતા:

દિગંબર સંપ્રદાયના પ્રથમ આર્થિકા પૂજ્ય જ્ઞાનમતીજી માતા દિગંબર જૈન ઇતિહાસમાં પ્રથમ ક્ષુલ્લિકા અથવા જૈન સાધ્વી તરીકે ગણવામાં આવે છે. આદરણીય ગનીની આર્થિકા રત્ન જ્ઞાનમતી માતાજી એ તેમની અનુભૂતિ ની અડધી સદી નો સમયગાળો પૂર્ણ કર્યો છે જે દિગંબર જૈન આર્થિકા સંઘના ઇતિહાસમાં ખૂબ જ નોંધપાત્ર અને ગૌરવપૂર્ણ ઘટના અને સિદ્ધિ છે. તેમણે જ્ઞાન અને ત્યાગના અનોખા સંગમ દ્વારા આધ્યાત્મિક ઉન્નતિ ના ક્ષેત્ર પર પગ મૂક્યો છે. રોષકારાય સતાવિભૂતય: જેવા ધ્યેયો અને ઉદ્દેશ્યો સિદ્ધ કરવા માટે તેમણે 'અખિલ ભારતીય જૈન મહિલા સંગઠન' તીર્થંકર ઋષભદેવ જૈન વિધવા મહાસંઘ', 'ત્રિલોક શોધ સંસ્થાન' જેવી ઘણી સંસ્થાઓની સ્થાપના કરી છે. જ્ઞાનમતિમાતાએ ન્યાય-અષ્ટ સહસ્રીનો એક પ્રખ્યાત સંસ્કૃત ગ્રંથ, વર્ષ 1969માં હિન્દીમાં અનુવાદ કરીને વિદ્વાનોની દુનિયા ને આશ્ચર્યમાં મૂકી દીધી હતી. તે હિન્દી, સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, કન્નડ, મરાઠી વગેરે જેવી વિવિધ ભાષાઓની નિષ્ણાત પણ બની હતી.. પછીથી સમયસાર, નિયમસાર વગેરે પર સંસ્કૃત અને હિન્દી માં સમજૂતી રચી; સ્વાધ્યાય માટે શાસ્ત્રો-જૈન ભારતી, જ્ઞાનામૃત, ત્રિલોક-ભાસ્કર, પ્રવચન નિર્દેશિકા વગેરે; પ્રતિજ્ઞા, સંસ્કાર, ભક્તિ, આદિ બ્રહ્મ, આટે કા મુર્ગા, જીવનદાન જેવી નવલકથા વગેરે 450 થી વધુ પુસ્તકો ની રચના કરી; 1995માં અવધ યુનિવર્સિટી (કૈમ્બ્રિજ) અને 8 એપ્રિલ 2012 ના રોજ તીર્થંકર મહાવીર યુનિવર્સિટી, મુરારાબાદ દ્વારા "D.Litt" ની માનદ પદવી એનાયત કરવામાં આવી. જૈન ગણિત અને ત્રિલોક વિજ્ઞાન પર આંતરરાષ્ટ્રીય પરિસંવાદ, રાષ્ટ્રીય ઉપકુલપતિ પરિષદ, ઇતિહાસકારોની પરિષદ, ન્યાયાધીશોની પરિષદ અને અન્ય ઘણા રાષ્ટ્રીય અને આંતરરાષ્ટ્રીય સ્તરે સેમિનાર વગેરેનું આયોજન અને નેતૃત્વ કર્યું. જંબુદ્વીપ, તેર્હદ્વીપ, ત્રીનલોક વગેરે જેવી અનન્ય રચનાઓ નું સર્જન અને ભગવાન શાંતિ-કુંથુ-અરનાથ ના જન્મ સ્થળ હસ્તિનાપુરમાં 31-31 ફૂટ ઊંચી ભગવાન શાંતિ-કુંથુ-અરનાથ ની વિશાળ મૂર્તિઓની સ્થાપના ની પ્રેરણા અને નેતૃત્વ કર્યું. શાશ્વત તીર્થ સ્થળ અયોધ્યા નો વિકાસ અને જીર્ણોદ્ધાર, આદિનાથ-અજિતનાથ-અભિનંદનાથ-અનંતનાથ ના જન્મ સ્થળ ટોક ખાતે ભવ્ય મંદિરનું નિર્માણ, 'નંદ્યાવર્ત મહેલ' નામના તીર્થસ્થાન નું ભવ્ય નિર્માણ, ભગવાન મહાવીરના જન્મ સ્થળ કુંડલપુર (નાલંદા-બિહાર), ભગવાન મુનિસુવ્રતનાથ જન્મભૂમિ રાજગૃહ અને ભગવાન શ્રેયાંસનાથ જન્મભૂમિ સિંહાપુરી (સારનાથ) ખાતે મંદિરનું નિર્માણ, ભગવાન ઋષભદેવ દીક્ષા ભૂમિ પ્રયાગ-અલાહાબાદ (ઉત્તર પ્રદેશ) ખાતે તીર્થંકર ઋષભદેવ તપસ્થલી તીર્થનું નિર્માણ, ત્રીસ ભગવાન ચૌબિસનાથ મંદિરનું નિર્માણ, અલ્લાહાબાદ અને ત્રીસ ભગવાન ચૌબિસનાથ મંદિરનું નિર્માણ. શિખર જી, પાવાપુરી, ગુણવાન, માંગીતુંગી વગેરે ખાતે મંદિરોનું નિર્માણ, સનાવડ (M.P.) ખાતે નમોકાર ધામ તીર્થનું નિર્માણ, માંગિતુંગીમાં નિર્માણાધીન ભગવાન ઋષભદેવની વિશાળ 108 ફૂટ ઊંચી પ્રતિમા, ભગવાન મહાવીર કેવલજ્ઞાન ભૂમિ વિકાસ અને સમ્મેદ શિખરજી માં "આચાર્ય શ્રી શાંતિસાગર ધામ" નો વિકાસ વગેરે કાર્યો તેમના માર્ગદર્શન હેઠળ થયા છે.

#### આર્થિકા 105 સુપાર્થ મતી માતાજી:

આચાર્ય 108 વીર સાગરજી મહારાજ ના શિષ્યા આર્થિકા સુપાર્થ મતી માતાજી દ્વારા લિખિત અને અનુવાદિત ગ્રંથની સૂચિ આ પ્રમાણે છે: પરમ અધ્યાત્મ તરંગિણી, સાગર ધર્મામૃત, નારી ચાતુર્ય, અનગાર ધર્મામૃત, મહાવીર ઓર ઉનકા સંદેશ, નય વિવક્ષા, મેરા ચિંતવન, નૈતિક શિક્ષા પ્રદ કહાનિયા ભાગ 10, 20 થી અધિક કૃતિ છે.

#### આર્થિકા 105 વિશુદ્ધ મતી માતાજી:

આચાર્ય 108 વીર સાગરજી મહારાજ ના શિષ્યા આર્થિકા વિશુદ્ધ મતી માતાજી દ્વારા શ્રીમદ સિદ્ધાંત ચક્રવર્તી નેમિચંદ્રાચાર્ય વિરચિત ત્રિલોક સારકી સચિત્ર હિન્દી ટીકા, ભદ્રારક સકલ કીર્ત્યાચાર્ય વિરચિત સાત દીપક અપર નામ કે દીપિકા કે હિન્દી ટીકા, ગુરુ ગૌરવ, શ્રાવક સોપાન ઓર બાર ભાવના આદિ સાહિત્ય સર્જન કર્યું છે.

गुजरात सरकारना अग्र सचिव मोना भंधारः आचार्यश्री नी प्रेरणाथी हजरो श्राविकाओये पण समाजना विभिन्न क्षेत्रोमां पोतानुं योगदान नोधायुं छे, तेमांना येक अेटले गुजरात सरकारना अग्र सचिव मोना भंधार. 21 वर्षनी ग्रेज्युअेट युवती जे आचार्य श्रीजो ना शिष्या बनवा तः पर हती, तेनी कुशाग्र बुद्धि जोध आचार्यश्रीये तेने IAS परीक्षानी तैयारी करवा जण्णायुं. गुरु ना आशीर्वाद ना अने अपार महेनत इण स्वरूपे सिविल सर्विस परीक्षा मां देशभरमां सातमो क्रम मेणवी टोयनी क्रमांकित महिला उमेदवार तरीके उभरी आव्या . हालमां पंचायत, ग्रामीण आवास अने ग्रामीण विकास विभाग अने महेसुल विभागना अग्र सचिवनी निर्णायक जवाबदारी संभाणवानी साथे तेओ विज्ञान अने टेकनोलोजी विभागना अग्र सचिव नो चार्ज धरावे छे. जापानमां भारतीय राजदूत वासमां सेवा अने G20 दरमियान पण महत्वनी जवाबदारी निभावी यूकेला मोना भंधार 25 वर्षथी वधु लांबी कार कारकिर्दी धरावे छे. शैक्षणिक रीते, मोना भंधारे हावऽ केनेडी स्कूलमांथी आंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र मां मेशन डेलो अने MPA उपरांत सिराकयुअ युनिवर्सिटीमां पोस्ट ग्रेज्युअेशन नो अભ्यास करी EPPA (छन्टरनेशनल ट्रेड इयनान्स) मां डिग्री मेणवे छे. आ सिद्धियो पहेला, तेओ मुंबई युनिवर्सिटीमांथी इण्डियन सिविल अेकाउन्टिग, कोस्ट अेकाउन्ट अने कम्प्युटर प्रोग्रामिंग मां विशेषता धरावता कोमर्सने स्नातक डिग्री नी साथे स्नातक थया हता.

### विश्लेषण अने निष्कर्षः

दिगांबर जैन संप्रदायमां अेवुं कहेवाय छे के स्त्री नो अवतार ते पापनुं इण छे, स्त्री पर्याय मां जैन मूर्तिनो स्पर्शनो अधिकार नथी, स्त्री पर्याय थी मोक्ष संभवित नथी, ते ज दिगांबर जैन संप्रदायमां स्त्री ना सर्वांगी विकास माटे आचार्यश्री जोना मार्गदर्शन हेठण प्रयत्नो थया छे अने ते ज संप्रदायमांथी सेकडो आर्थिका, बाल ब्रह्मचारी बहेनो अने श्राविकाओये भारतीय ज्ञान प्रणालीमां अने जैन परंपरा माटे अभूतपूर्व योगदान 20मी अने 21मी सदीमां कर्युं छे. प्रतिभास्थली जेवी शिक्षण संस्था मांथी नीकलेली जैन अने जैनेतर विद्यार्थिनीओ आजे समाजमां आदरणीय अने प्रमाणिक रेडियोलोजिस्ट, अेडवोकेट, अेन्जिनियर, प्रोफेसर, डॉक्टर आदि रूपे सेवा आपी स्वस्थ अने आदर्श समाज माटे बहोणुं योगदान आपी रही छे. पाश्चात्य देशोमां छेल्ला 300 वर्षनी अंदर ज अेवुं कहेवातुं विकास थयो के जेमां आकाश, जण, पृथ्वी कंठ पण सांरुं रहुं नही, विकास ना नामे विनाश नी ओर ज जगत धस्तु गयुं. तेमनी संस्कृति मां स्त्री सशक्तिकरण अेटले स्त्रीओनुं आत्मनिर्भर थयुं पण तेमां कयांथ पण मूल्य शिक्षण, संस्कार, धर्म वगैरे भाग भजवतो न हतो. ज्यारे भारतनी हजरो लाभो वर्ष जूनी संस्कृति अेटले टकी शके छे कारण के धर्म, मूल्यो, संतो वगैरे रोजिंदा जिवनना अभिनय अंगो हता . आ ज संस्कृतिने टकावी राभवा आचार्यश्री अने आर्थिका माताओ प्रतिभास्थली जेवी संस्था ना माध्यमे सुसंस्कृत, शिक्षित, मूल्योने आधारे जिवन जवती स्त्रीओनो अने समाजना धाएतर अने विकासनुं बीडुं उडयुं छे. तेना सुंदर इण स्वरूपे मोना भंधार जेवी हजरो सुसंस्कारी, धार्मिक, मूल्य आधारित जिवन निर्वाह करनारी स्त्रीओ समाजमां पोतानुं बहोणुं योगदान आपी रही छे. आज सन्नारीओ वसुधैव कुटुंबकम जेवी भारतीय संस्कृतिने जाणवी, समग्र जगतने ज्ञान, कला, विज्ञान वगैरेनो संयमित अने सुनियोजित उपयोग करवानुं मार्गदर्शन पूरुं पाडी भारतने विश्व गुरु बनाववा माटे तैयार छे.

### संदर्भ ग्रंथ

- [1] Baal Br. Pt. Sumat Prakash Ji. “आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के जीवन के प्रेरक प्रसंग || आ. बाल ब्रह्मचारी श्री सुमतप्रकाशजी.” *YouTube*, 25 Feb. 2024, [www.youtube.com/watch?v=sGyBfVOpB74](http://www.youtube.com/watch?v=sGyBfVOpB74).
- [2] Digjainwiki. “Aryika Shri 105 Suparswamati Mata Ji (Mainsar) - DigJainWiki.” *DigJainWiki - the Place for Digambar Jain Information*, 18 Dec. 2023, [digjainwiki.org/wiki/aryika-shri-105-suparswamati-mata-ji-mainsar](http://digjainwiki.org/wiki/aryika-shri-105-suparswamati-mata-ji-mainsar).
- [3] “Aryika Shri 105 Vishuddhmati Mata Ji 1929 - DigJainWiki.” *DigJainWiki - the Place for Digambar Jain Information*, 27 Dec. 2023, [digjainwiki.org/wiki/aryika-shri-105-vishuddhmati-mata-ji-1929](http://digjainwiki.org/wiki/aryika-shri-105-vishuddhmati-mata-ji-1929).
- [4] Jain, Harsh. “Pujya Gyanmati Mataji Granth Suchi - Encyclopedia of Jainism.” *Encyclopedia of Jainism - Encyclopedia of Jainism*, 5 Dec. 2023, [encyclopediaofjainism.com/pujya-gyanmati-mataji-granth-suchi](http://encyclopediaofjainism.com/pujya-gyanmati-mataji-granth-suchi).
- [5] Jainworld. “CONTRIBUTIONS OF JAINISM TO INDIAN CULTURE - Jainworld.” *Jainworld*, 26 Aug. 2022, [jainworld.com/literature/jain-history/contributions-of-jainism-to-indian-culture](http://jainworld.com/literature/jain-history/contributions-of-jainism-to-indian-culture).
- [6] Jainworld. “SOCIAL LIFE OF THE JAINA COMMUNITY IN MEDIEVAL TIMES - Jainworld.” *Jainworld*, 26 Aug. 2022, [jainworld.com/literature/jain-history/social-life-of-the-jaina-community-in-medieval-times](http://jainworld.com/literature/jain-history/social-life-of-the-jaina-community-in-medieval-times).

- [7] Jambudweep. “श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय (मुख्य) - Encyclopedia of Jainism.” *Encyclopedia of Jainism - Encyclopedia of Jainism*, 7 Jan. 2024, encyclopediaofjainism.com/%E0%A4%97%E0%A4%A3%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%96-%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80-%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%AE-3.
- [8] Vidya purn. “#विद्यापूर्ण आ.रत्न 105 पूर्णमति माताजी को वैराग्य कैसे हुआ जाने इस संस्मरण के माध्यम से.” *YouTube*, 20 Jan. 2021, www.youtube.com/watch?v=t3JNCER4Uz8.
- [9] “आर्यिका 105 पूर्णमती माता जी.” *Vidyasagar Ji Maharaj | Vidyasagar Ji Maharaj Pravachan | Jain Religion in Hindi*, www.vidyasagar.net/aryika-105-purnamati-mata-ji.
- [10] “दीक्षित आर्यिकाएं.” *Vidyasagar Ji Maharaj | Vidyasagar Ji Maharaj Pravachan | Jain Religion in Hindi*, www.vidyasagar.net/aryika-2.
- [11] देसाई, कुमारपाण “मूकमाटी ऐक कृति पर 52 संशोधकोने पीअेयडी” गुजरात समाचार, 25 डेब्रुआरी 2024
- [12] मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज. “जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज www.AcharyaVidyasagar.com. मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, 5 Sept. 2021, vidyasagar.guru/acharyashri.
- [13] “प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ.” मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, 24 Feb. 2001, vidyasagar.guru/clubs/16-group.
- [14] मूकमाटी, आचार्य श्री विद्यासागर महाराज, अनुवादक ब्रह्मचारी बिंदु पारेष, सह अनुवादक श्री भरतभाई कापडिया, भारतीय ज्ञानपीठ, न्यु टिहली, 2016